सिर्फ़ मेला नहीं, विज्ञान भी आसपास के जन मुद्दे भी शामिल

माया मौर्य



प्रस्तावना

विज्ञान केवल एक विषय ही नहीं है बल्कि अपने-आप में एक सम्पूर्ण दुनिया है, यह कहना बिलकुल भी ग़लत न होगा कि "ज्ञान का वह स्वरूप जिसमें क्रम की प्रधानता हो, विज्ञान कहलाता है", अर्थात किसी भी प्रकार का क्रमबद्ध व व्यवस्थित ज्ञान ही विज्ञान है, फिर चाहे वह मानव सम्बन्धित हो, समाज सम्बन्धित या फिर पृथ्वी सम्बन्धित, जीवन की प्रत्येक इकाई में विज्ञान समाहित है। विज्ञान में केवल पढ़ना या लिखना भर नहीं है बल्कि ख़ुद करके अनुभव प्राप्त करना, प्रेक्षणों का अवलोकन, तर्क संगतता व निरन्तर उसमें होने वाले बदलाव की स्वीकार्यता भी शामिल है। इस नज़रिए के अनुरूप विज्ञान विषय पर काम हो पाए इसके लिए स्कूल द्वारा विज्ञान मेले का आयोजन किया गया था। विज्ञान को पढ़ना, समझना और उसे अपने रोज़मर्रा के जीवन में खोजना व उपयोग करना इस मेले का मुख्य उद्देश्य था।

विज्ञान मेले की रणनीति

हर बार की तरह इस बार भी विज्ञान मेले के आयोजन का कार्यक्रम तय था। अब के विज्ञान मेले में कुछ फ़र्क़ था, और फ़र्क़ यह था कि पहले शिक्षक ही हर कॉर्नर का संचालन करती, बच्चों के साथ तय कॉन्सेप्ट पर गतिविधियाँ करवाती हुई बच्चों में समझ विकसित करवाती थीं। पर इस बार बच्चों के साथ मिलकर तय किया गया कि इस मेले का आयोजन दो दिन के लिए रखें जिसमें एक दिन शिक्षक और दूसरे दिन बच्चे अपने मॉडलों की प्रस्तुति रखें। साथ ही जो भी अवधारणा उन्होंने क्लास में पढ़ी, समझी और प्रयोग करते हुए सीखी, उसका उपयोग भी करें।

मेले की तैयारी में बच्चों की भूमिका

किताब में पढ़े विज्ञान के पाठों, मसलन, चुम्बक, करंट, जैविक खाद आदि को प्रयोग द्वारा समझा और विस्थापन जैसे कुछ मुद्दों को फ़ील्ड में जाकर नज़दीकी से समझते हुए भारत में चल रहे स्मार्ट सिटी के प्रोजेक्ट से होने वाले फ़ायदे और नुक़सान पर चर्चाएँ कीं और उसे ही परियोजना का हिस्सा बनाया। बच्चों के बड़े समूह में जब चर्चा की, कि हम इस तरह का विज्ञान मेला सोच रहे हैं, तो बच्चे बहुत उत्सुक दिखे क्योंकि बच्चे भी कुछ सृजनात्मक और अभिनव करना चाह रहे थे। कक्षा छठवीं से आठवीं के बच्चों ने अपने-अपने मॉडलों की थीम सोचकर, कि उसे कैसे बनाएँगे, कौन क्या बनाएगा, सामान क्या-क्या चाहिए होगा, सामान मँगाया और कुछ सामान की जुगाड़, कबाड़ से करने का तय किया। बस, फिर क्या था बच्चों ने अपना-अपना काम ज़ोर-शोर से शुरू कर दिया। बच्चे अपने-अपने समूह के काम में पूरी शिद्दत से मसरूफ़ थे। अपने शिक्षकों से भी ज़रूरत अनुसार चर्चा करते रहे। अब वक़्त था पढ़े हुए ज्ञान और समझ का वास्तविक उपयोग करना।

शिक्षक द्वारा संचालित कार्नर

विज्ञान मेले का पहला दिन

हमारे स्कूल में पहली से तीसरी कक्षा तक के बच्चों के साथ 'मज़े-मज़े में विज्ञान के खिलौने' बनाने का काम किया जिसमें कबाड़ से जुगाड़ वाले वेस्ट मटेरियल का पुनः उपयोग किया गया। बच्चों ने सामान भी स्वयं ही इकट्ठा किया।

1. जादुई माचिस : यह खिलौना, माचिस और दो रंगों के धागे से बना हुआ है। शुरुआत में बच्चे इसे जादू समझ रहे थे क्योंकि माचिस के आगे-पीछे होने पर उन्होंने धागे का रंग बदलते देखा। जब बच्चों से पूछा गया कि ऐसा क्यों हो रहा है, बच्चों ने अनुमान लगाया कि माचिस बॉक्स में रंग होगा। किसी ने कहा कि इसमें दो रंगों के धागे होंगे। बच्चे एक दूसरे की मदद कर रहे थे।



2. केलाइडोस्कोप : बच्चों को जब केलाइडोस्कोप में देखने को कहा गया तो बच्चों को रंग-बिरंगी आकृतियाँ देखने में बहुत ख़ुशी हो रही थी और मज़ा भी आ रहा था।

खनक ने पूछा, "दीदी, इसको कैसे बनाया है? बहुत प्यारा दिख रहा है।" बच्चों ने ध्यान से निर्देश सुने और केलाइडोस्कोप बनाने में लग गए। दिव्या ने खनक से कहा, "तूने एक चूड़ी का टुकड़ा बड़ा डाला है इसलिए डिज़ाइन नहीं बन रहा है।" इस प्रकार बच्चे एक दूसरे को अपना केलाइडोस्कोप बनाकर दिखा रहे थे और मार्गदर्शन कर रहे थे। सभी बच्चे एक से बढ़कर एक सुन्दर आकृति को देखने में मग्न हो गए। 'ये मेरा देख', 'ये मेरा देख', सब बच्चों की आवाज़ क्लास में गूँजने लगी। इसी तरह बच्चों ने फ़व्वारा भी बनाया जो हवा के दबाव पर आधारित था। बच्चों ने खेल-खेल में कुछ सरल अवधारणाएँ भी समझीं।

बच्चों को माचिस में छेद करने, काँच की स्ट्रिप को सटाकर एक दूसरे पर लगाने, आदि में थोड़ी मुश्किल भी हुई। पर बच्चों के यही

प्रयास उन्हें सीखने के लिए प्रेरित कर रहे थे। सामूहिक भावना से किया गया काम उन्हें लगन और धैर्य में बाँधे रख रहा था।



ख़ास बात यह कि बच्चों ने सीखी चीज़ों को बस्ती के अन्य दोस्तों को भी सिखाया।

कक्षा चौथी से आठवीं तक के बच्चों को चार समूहों में विभाजित किया।

इन कक्षाओं के लिए पहले दिन के चार कार्नर इस प्रकार थे :

1. चुम्बक, 2. फूलों की संरचना, 3. विद्युत परिपथ, और 4. घूमती दुनिया (ग्रह)।

प्रत्येक कार्नर में विषय की गम्भीरता और बच्चों से उसकी समझ को साझा करते हुए छोटे-छोटे क्रियाकलापों की मदद से बच्चों को विषय से अवगत कराया। प्रत्येक कार्नर का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

1. चुम्बक

- सबसे पहले चुम्बक से सम्बन्धित मैग्नस की कहानी सुनाई और चुम्बक व उसके प्रकारों से अवगत कराया।
- मिश्रण देकर उसमें से चुम्बकीय और अचुम्बकीय पदार्थों को अलग करवाया और चुम्बकीय पदार्थ को चुम्बक से चिपकाने को कहा, इससे चुम्बकीय प्रबलता और ध्रुव की समझ बनी।
- ध्रुव के परिचय के बाद स्वतंत्रतापूर्वक लटकाने पर दिशा (उत्तर-दक्षिण) का निर्धारण समझाया।
- एक आलपिन को चुम्बक की सहायता से प्रयोग द्वारा अस्थाई चुम्बक बनाया गया।
- 8 रिंग चुम्बक की सहायता से आकर्षण और प्रतिकर्षण के सिद्धान्त पर पेंसिल को हवा में स्वतंत्रतापूर्वक खड़ा किया।

बच्चों की प्रतिक्रिया

बच्चों ने दैनिक जीवन से जोड़कर कुछ उदाहरण भी दिए। मसलन, उन्होंने बताया कि वो चुम्बक का उपयोग तालाब और नदी से पैसे को निकालने में करते हैं। कुछ ने कहा कि वे सामान बीनते हुए सोने की तरह दिखने वाली कुछ चीज़ों को भी चुम्बक से ही चेक करते हैं। बच्चों ने पिन की सहायता से अस्थाई चुम्बक बनाकर दिशा का पता लगाया व चुम्बक की मदद से पुनः चेक भी किया।

बच्चों ने चुम्बक द्वारा रेत में से लोहे के कणों को अलग किया। यह अनुभव बच्चों के लिए नया था।

हमने सीखा और देखा

कार्नर में बच्चों की अपनी जानकारी को स्थान देते और उसे बढ़ाते हुए चुम्बक की समझ को विस्तार दिया। कार्नर के अन्त में बच्चे चुम्बक के गुण – आकर्षण व प्रतिकर्षण – से, उत्तर-दक्षिण दिशा व ध्रुव, और स्थाई व अस्थाई चुम्बक की जानकारी से परिचित हुए।

2. फूलों की संरचना

- कार्नर की शुरुआत कुछ सवालों से हुई। मसलन, क्या आप जानते हैं कि यहाँ क्या होने वाला है, हम आपको क्या दिखाने वाले हैं, आदि। कुछ बच्चों के जवाब 'हाँ' में और कुछ के 'न' में

आए। फिर बच्चों ने बोला कि कार्नर का नाम 'एक नज़र फूलों पर' है तो फूलों के बारे में ही कुछ होगा।

- कुछ फूलों को दिखाते हुए पूछा कि आप इन फूलों को पहचानते हैं तो नाम बताइए। बच्चे दो फूलों, लाल फूल (गुड़हल) और गेंदा, के नाम बता पाए। बाक़ी के फूल उन्होंने देखे तो थे पर उनके नाम नहीं जानते थे।
- प्रत्येक बच्चे के हाथ में धतूरे का एक-एक फूल दिया गया। फूलों के बाह्य अंगों के साथ अन्दर के अंगों से भी अवगत कराया गया, जैसे– पंखुड़ी, अंखुड़ी, स्त्रीकेसर, पुंकेसर, अंडाशय, आदि।
- नामों से अवगत करने के पश्चात फूलों में होने वाली निषेचन क्रिया को वीडियो के माध्यम से दिखाया गया।

बच्चों की प्रतिक्रिया

बच्चों ने बताया कि उन्होंने फूलों में केवल ख़ुशबू, रंग व डिज़ाइन को ही देखा है और वो भी ज़्यादातर पूजा के समय ही। कुछ ने कहा कि गुलाब के फूलों को उन्होंने किसी के घर से भी मस्ती-मस्ती में चुराया है। फूलों से शहद बनता है वो जानते हैं व उन्होंने अपने दोस्तों को भी फूल दिए हैं।

कॉर्नर में रखे फूलों को देख बच्चे नाम सोच रहे थे। कुछ फूलों के नाम तो वे जानते थे, जैसे– गुड़हल, गेंदा आदि। कुछ-कुछ सब्ज़ियों के फूल भी बच्चों ने देखे हैं।

राधेपाल ने कहा कि फूलों के सभी भाग कितने काम के हैं, यह मुझे पहली बार पता चला है।

वंदना ने आश्चर्य व्यक्त किया कि फूलों में भी नर और मादा होते हैं।

हमने सीखा और देखा

बच्चों ने इस कार्नर के माध्यम से फूल से फल बनने की प्रक्रिया को जिज्ञासापूर्वक समझा। बच्चे फूलों के बाह्य व आन्तरिक अंगों से अवगत हो पाए और इसके साथ ही कुछ रोचक बातें भी बच्चों को समझ में आईं, जैसे– गेंदे का फूल एकमात्र फूल नहीं है अपितु वह फूलों का एक गुच्छा होता है।

3. विद्युत परिपथ

- विद्युत परिपथ और विद्युत से परिचित करवाते हुए विद्युत से चलने वाले उपकरणों पर चर्चा करना।
- परिपथ में प्रयोग की जाने वाली चीज़ों को अवलोकन और सामग्रियों से परिचय करवाना।
- सामूहिक रूप से एक साधारण विद्युत परिपथ (सर्किट) तैयार करवाना।
- धनात्मक और ऋणात्मक आवेश पर



चर्चा करके बल्ब जलाने में आवेशों के महत्त्व को समझाना।

- सुचालक और कुचालक बताना।
- बच्चों द्वारा ही सुचालक और कुचालक वस्तुओं की पहचान करवाना।

बच्चों की प्रतिक्रिया

बच्चों ने बताया कि घरों में अर्थिंग और फेस से ही लाइट जलती है, यदि दोनों में से कोई एक न हो तो लाइट नहीं जल पाएगी। सेल में प्लस-माइनस के निशान होते हैं और जीभ से छूने पर जीभ झनझनाने का मतलब है कि सेल चालू है। लोहे की चीज़ों में करंट जल्दी फैलता है।

हमने सीखा और देखा

- बच्चों ने जाना कि बल्ब जलाने के लिए हमें धन और ऋण आवेशों की ज़रूरत होती है, अर्थात अर्थ फेस का होना अनिवार्य है।
- प्रयोग करके जाना कि हमारे द्वारा पहनी रिंग, कंगन, चैन, अँगूठी, पिन, सुई जैसी लोहे, चाँदी आदि धातुओं से बनी वस्तुएँ विद्युत सुचालक होती हैं।
- कुचालक का मतलब भी हम अच्छे-से समझ पाए, अर्थात कोई भी धातु या वस्तु, जो करंट प्रवाहित करने या बल्ब जलाने में मददगार नहीं है, कुचालक होगी।

4. घूमती दुनिया

- हमने बच्चों के साथ सौर प्रणाली को समझना और समझाना तय किया। इसमें हमने 3 उप विषय चुने :
  - दिन और रात;
  - सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण; और
  - पृथ्वी का घूर्णन और सूर्य का परिक्रमण।



सेट-अप : हमारे इस उद्देश्य में सेट-अप की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। दिन-रात, सूर्य ग्रहण व चन्द्र ग्रहण और पृथ्वी का घूर्णन व सूर्य की परिक्रमा, तीनों ही विषयों के लिए कमरे में अँधेरा किया और ग्लोब, टॉर्च एवं नक़्शे के द्वारा इन घटनाओं पर समझ बनाने की कोशिश की गई।

बच्चों की प्रतिक्रिया

बच्चों से यह पूछने पर, कि सूर्योदय और सूर्यास्त के समय आपको आसमान में क्या दिखता है, उन्होंने अपने अवलोकन साझा किए। उन्होंने एक माह तक चाँद की रोज़ की घटती-बढ़ती आकृति को कॉपी में नोट किया, इससे पृथ्वी के घूमने को अच्छे-से समझने में आसानी हुई। बच्चों ने सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण के बारे में प्रश्न भी पूछे। उन्होंने बस्ती में सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण के समय मानने वाले अन्धविश्वास के बारे में भी बताया।

अमन ने पूछा, "दीदी, यह अन्धविश्वास नहीं मानने से नुक़सान होता है क्या?"

बच्चों ने यह भी पूछा कि ग्रहण में बाहर क्यों नहीं निकलना चाहिए। बच्चे सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण के बारे में जानने के लिए बहुत उत्सुक थे। जीनू ने कहा कि यदि हमें अमरीका जाना है तो हम एरोप्लेन से ऊपर एक जगह ही रहें और पृथ्वी तो घूमकर अमरीका वाली जगह पर आ ही जाएगी तब हम उतर जाएँगे, वहाँ जाने की ज़रूरत क्या है? (यह एक महत्त्वपूर्ण

प्रश्न था। लेकिन इसपर तब हमने बात नहीं की।)

हमने सीखा और देखा

बच्चों ने पृथ्वी के परिक्रमण और घूर्णन के अन्तर को समझा। सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण होने का कारण, रात-दिन क्यों होते हैं, और तारे क्यों चमकते हैं, इस बारे में समझ बनाई।

विज्ञान मेले का दूसरा दिन

बच्चों द्वारा बनाए गए चलित मॉडल का प्रस्तुतिकरण : विज्ञान मेले में छात्र-छात्राओं ने अपने-अपने विज्ञान प्रोजेक्ट प्रस्तुत किए। विज्ञान प्रोजेक्ट का उद्देश्य विद्यार्थियों में वैज्ञानिक प्रतिभा को विकसित व प्रोत्साहित करना और उन्हें जनसमुदाय एवं विज्ञान की सम्बद्धता के साथ जोड़कर देखना था कि किस स्थिति में विज्ञान लोगों के हित में काम कर सकता है और कम ख़र्च में अभिनव चीज़ें बनाकर मॉडल के रूप में प्रस्तुत करके नई खोज की ओर बच्चे अग्रसर हों। साथ ही प्रोजेक्ट के माध्यम से अपनी सोच को एक तार्किक ढंग से लोगों को बता पाएँ।

मेले में जीवन शिक्षा पहल स्कूल के माध्यम से छात्र-छात्राओं के द्वारा विज्ञान में अभिरुचि पैदा करने एवं अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया। छात्र-छात्राओं ने प्रदर्शनी के माध्यम से अपनी रचनात्मकता को उकेरा।



इस प्रदर्शनी में जीवन शिक्षा पहल के दसवीं, आठवीं, सातवीं और छठवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने प्रदर्शनी और मॉडल बनाए। उन्होंने अपनी रुचि के अनुसार कई प्रोजेक्ट साझा किए। प्रदर्शनी से पहले क़रीब एक महीने की बातचीत से ये निष्कर्ष निकला कि सातवीं कक्षा के विद्यार्थी ज्वालामुखी व पवन चक्की पर, आठवीं के स्मार्ट सिटी पर व छठवीं के विद्यार्थी जैविक खेती पर अपनी प्रदर्शनी लगाएँगे। विषय तय होने के बाद इसकी तैयारी में छात्र-छात्राओं सहित अध्यापकों का भरपूर सहयोग रहा।

स्मार्ट सिटी को लेकर विद्यार्थियों के अपने भिन्न-भिन्न विचार थे। मसलन, बस्तियों को तोड़कर स्मार्ट सिटी बनाई जा रही है; पेड़ों को काटकर सड़क चौड़ी की जा रही है; कई जगह बस्तियों को हटाकर मॉल बनाए जा रहे हैं; बच्चों की पढ़ाई और माता-पिता के रोज़गार छिनते जा रहे हैं; आदि। विद्यार्थियों ने स्मार्ट सिटी बनाने में कुछ चीज़ें कबाड़ख़ाने से चुनीं और कुछ बाज़ार से ख़रीदीं। स्मार्ट सिटी संकल्पना को मॉडल के माध्यम से बारीक़ी से प्रदर्शित किया। यह मॉडल बनाते समय विद्यार्थियों के सामने काफ़ी समस्याएँ आ रही थीं। मसलन, स्मार्ट सिटी में किन चीज़ों को रखें और किनको नहीं, और साथ ही उन चीज़ों के मापदण्ड क्या हों। वहीं स्मार्ट सिटी में जब मेट्रो को भी जोड़ा गया तब विद्यार्थियों ने हूबहू मेट्रो का मॉडल बना दिया। इसका कारण यह भी है कि विद्यार्थियों ने राजधानी दिल्ली में मेट्रो को बारीक़ी से देखा था, फिर जैसे-जैसे विज्ञान मेला नज़दीक आ रहा था, उसमें मॉडल के रखरखाव व मेज़रमेंट को लेकर विद्यार्थियों की सूझबूझ में अध्यापकों का विशेष सहयोग रहा।

इसी प्रकार कक्षा में 'ज्वालामुखी' पाठ को पढ़ाकर बताया गया कि यह एक प्राकृतिक आपदा है और इसके कई



प्रकार हैं। एक पक्की समझ बनाने हेतु इसे भी मॉडल का एक हिस्सा बनाया गया। इस मॉडल के लिए जो सामान चाहिए थे उनकी व्यवस्था ख़ुद के आइडियाज़ और अध्यापकों के सहयोग से ही सम्भव हो पाई। मॉडल कक्षा की ज़रूरत को देखते हुए भी तय किए गए। वैक्यूम क्लीनर का मॉडल बनाने में बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। यह बच्चों की नई सोच थी।

विद्यार्थियों का एक मॉडल को ही अलग-अलग दृष्टि से देखना, फिर सुधारना और अपने प्रश्नों के उत्तरों को खोजना, ये ललक इस प्रदर्शनी के दौरान देखने को मिली। मसलन, जब विद्यार्थियों ने वैक्यूम क्लीनर का मॉडल बनाया तब किसी को समझ नहीं आया कि उसकी पंखुड़ियाँ उल्टी लग चुकी थीं, उसके काम न करने पर विद्यार्थियों के चेहरे पर चिन्ता की लकीरें छा गईं। मगर उन्हीं में से एक विद्यार्थी ने धैर्य से काम लेकर वैक्यूम क्लीनर का मुआयना किया और पाया कि पंखुड़ियाँ उल्टी लगी हुई थीं।

बच्चों के अनुभव

- बच्चों के लिए विज्ञान प्रोजेक्ट का यह पहला अवसर था जब उन्हें अपने हुनर दिखाने का मौक़ा मिला।
- शुरू में बच्चे दुविधा में थे कि इतनी मेहनत करने के बाद मॉडल सही बन भी रहा है या नहीं। बार-बार कोशिश करने पर यह हौसला भी बना कि वे सही कर रहे हैं।
- मंजना ने कहा कि जब पालकों को मॉडल की कार्यप्रणाली बता रहे थे तो थोड़ा नर्वस भी थे क्योंकि इस तरह से सवाल-जवाब का यह हमारा पहला अनुभव था। सामूहिक सहयोग से सवालों के जवाबों को सकारात्मक रूप से दिया। धीरे-धीरे हमारा आत्मविश्वास बढ़ता गया।
- अमन ने कहा कि मैं शुरू में थोड़ा झिझक रहा था कि कैसे समझाऊँगा, पर धीरे-धीरे प्रैक्टिस के बाद मैं अच्छे-से समझा पाया।

पालकों के अनुभव

रूपरानी : "बच्चों ने बहुत अच्छा बनाया है। उन्होंने काफ़ी मेहनत की है। दीदी, आप लोग पढ़ाई के साथ ये चीज़ें भी सिखाते हो।"

पैंसठलाल : "गाँव में इतनी हरियाली है। कोई गन्दगी नहीं है। बच्चों ने कितने अच्छे-से

मॉडल बनाए हैं, पूरी चीज़ें असली लग रही हैं। बच्चे अपनी भाषा में हमको समझा रहे हैं। इनको देखकर अच्छा लग रहा है।"

लता : "बच्चों ने घर पर बोला कि मुस्कान के बच्चे बहुत दिनों से अलग-अलग मॉडल बना रहे हैं, मम्मी तू देखने आना, इसलिए हम आए हैं। मुझे कचरा साफ़ करने वाली मशीन (वैक्यूम क्लीनर) अच्छी लगी। बच्चे ऐसे ही अच्छा-अच्छा सीखें और हमसे आगे निकलें।"

हम शिक्षकों ने क्या सीखा

- बच्चों को भी मौक़े देना चाहिए कि वो ख़ुद से कुछ-न-कुछ प्रोजेक्ट, मुद्दे और मॉडल पर काम करें और ख़ुद उसके बारे में जानकारी एकत्र कर सीखें। किताब के अलावा कुछ ज्ञान समुदाय से अर्जित कर पाएँ।
- मैंने भी विज्ञान के कुछ प्रयोगों को बच्चों के साथ मिलकर सीखा।
- बच्चे अपने ख़ास दोस्तों के बिना भी अलग-अलग समूह में ख़ुश थे और मन लगाकर काम कर रहे थे।
- प्रयोग करने की चाह में किताबों के साथ बच्चों का जुड़ाव देखने को मिला। देर रात तक बच्चे काम करते रहे। बच्चों की सामूहिक भावना ने उनके काम को आसान बनाया। ऐसे काम बच्चों को समय-समय पर देते रहना चाहिए।
- फूलों का कॉन्सेप्ट मेरे लिए भी नया था।

माया मौर्य पिछले 15 साल से मुस्कान संस्था, भोपाल के साथ एक शिक्षिका के रूप में कार्य कर रही हैं। वे बस्ती सेंटर पर कामकाजी और स्कूल ड्रॉपआउट बच्चों को खेल-खेल में मनोरंजक तरीक़े से सीखने-सिखाने का कार्य करती हैं। उन्हें बच्चों के बीच पढ़ाने में ख़ुशी मिलती है और बच्चों से बहुत कुछ सीखती हैं, उन्हें किताबें पढ़ने में रुचि है।

सम्पर्क : mayasom@gmail.com